



मस्त अदाओ वाली

शशिकांत निशांत शर्मा 'साहिल'

वया खुब लगती है
जब वह चलती है
मचक-मटक के
थोड़ा जटक के
थोड़ा लचक के
थोड़ा बहल के
वया खुब दिखती है
जब वह देकती है
थोड़ा आगे जाके मुड़ के
थोड़ा यार घुड़ के
यू नज़रे तिरछी कर के
बालो को बिखरा के
दुपट्टे को संभाल के
वया खुब हंसती है
जब वह खुश होती है
झुलफो को लहरा के
मंद मंद मुस्का के
थोड़ा सा शरमा के
थोड़ा भरमा के
नज़रो की जादू से
हंस देती यार वो तो
नयनो को मटका के
वया खुब बाते करती है
जब वह बोलती है
हाथो को हिला-हिला के
नजर को नजरों से मिला के
मधू पिला के



साहित्य संहिता

Available at <http://sahityasamhita.org/>

ISSN 2454-2695
Volume 01 Issue 10
November 2015

नरम-नरम ओढों से
वया खुब निकलती आवाज
बस ज्यादा नही आज
अंत में यही कहती